बुध्दं शरणं गच्छामि - भाग ३

निर्वाण मंदिर

उजव्या कुशीवर पहुडलेला बुध्द

बुध्दाच्या दहनाच्या जागी असलेला स्तूप

Votive स्तूप

कच्ची कुटी

महेठ में स्थित यह सर्वाधिक महत्वपूर्ण उत्खनित अवशेष है । इसको चीनी यात्रियों फाहियान तथा हेनसांग द्वारा उल्लिखित सुदत्त 'अनाथपिण्डक' द्वारा निर्मित स्तूप से समीकृत किया गया है । इसका कच्ची कुटी नाम एक साधु द्वारा इसके ऊपर कच्ची ईंटों से एक देवालय के निर्माण के कारण पड़ा । ये उत्खनित अवशेष द्वितीय शती ई. से 12वीं शती के मध्य हुये विभिन्न कालों के निर्माण को दर्शाते हैं । इस संरचना के विभिन्न स्तर इसकी भू-योजना को अत्यधिक दुरूह बनाते हैं जिससे इसका अभिज्ञान कठिन हो गया है । यहाँ से प्राप्त अनेक पुरावशेषों तथा उत्खनित अवशेषों के आधार पर ऐसा प्रतीत होता है कि यहाँ कुषाण कालीन स्तूप पर गुप्तकाल में एक देवालय का निर्माण हुआ ।

यहाँ से एक रास्ता इसे नौसहरा तथा कांधारी द्वार से जोड़ता है ।

दिनाँक : फरवरी 1, 2005

KACHCHI KUTI

This is the most important excavated structure situated in Maheth. It is identified with the stupa of Sudatta popularly known as Anathapindika as referred by the famous Chinese travelers Fa-Hien and Hiuen-Trang. It is known as Kachchi Kuti in view of the fact that a sadhu made temporary shrine of Kacheha bricks on the top of this structure.

It represents structural remains of different periods beginning from 2nd century AD to 12th century AD. The different strata of the structure makes it very complicated to understand its identification. On the basis of large number of antiquities recovered from the site and nature of exposed structures, there appears to be a superimposition of a shrine belonging to Gupta period over a Buddhist stupa of Kushana period.

The pathway connects this structure with the city gates known as Nausahra and Kandhari gates.

SUPERINTENDING ARCHAEOLOGIST
ARCHEOLOGICAL SURVEY OF INDIA
LUCKNOW CIRCLE,
LUCKNOW

मूलगंध कुटीच्या आजूबाजूचा परिसर

मूलगंध कुटीच्या आजूबाजूचा परिसर

- डॉ. मंजिरी मणेरीकर